CHAPTER 20, आओ, मिलकर बचाएँ

PAGE 183, प्रश्न - अभ्यास - कविताकेसाथ

11:1:20:प्रश्न - अभ्यास - कविताकेसाथ:1

1. माटी का रंग प्रयोग करते हुए किस बात की ओर संकेत किया गया है?

उत्तर : कवयित्री ने 'माटी के रंग' का उपयोग 'अपनी मूल पहचान को बनाए रखने' का संकेत किया है। इस कविता में कवियित्री स्थानीय संथाली लोक जीवन की महत्वपूर्ण विशेषताओं को प्रदर्शित को प्रदर्शित करने के लिए 'माटी के रंग' का प्रयोग किया है। वह चाहती है कि यहां के लोग सादगी, मासूमियत, प्रकृति और लगाव आदि को बाहरी आकर्षण बचाये रखें।

11:1:20:प्रश्न - अभ्यास - कविताकेसाथ:2

2. भाषा में झारखंडीपन से क्या अभिप्राय है?

उत्तर : संथाली आदिवासियों की मातृभाषासंथाली है। वे दैनिक

व्यवहार में जिस संथाली भाषा का प्रयोग करते हैं,उसमें उनके राज्य झारखण्ड की पहचान झलकती है। उनकी भाषा से यह पता लग जाता है कि वे झारखण्ड राज्य के निवासी हैं। कवयित्री भाषा के इसी स्थानीय स्वरुप की रक्षा करने को कहती है। कवयित्री चाहती हैं कि यहाँ के लोग अपनी भाषा की स्वाभाविक विशेषता को नष्ट न करें।

11:1:20:प्रश्न - अभ्यास - कविताकेसाथ:3

3. दिल के भोलेपन के साथ-साथ अक्खड़पन और जुझारूपन को भी बचाने की आवश्यकता पर क्यों बल दिया गया है?

उत्तर : सच्चाई और ईमानदारी के लिए दिल की मासूमियत जरूरी है, लेकिन हर वक्त मासूमियत ठीक नहीं होती। भोलेपन का फायदा उठाने वालों को अक्खडपन दिखाना भी आवश्यक है। अपनी बात को व्यक्त करने तथा मनवाने के लिए अक्खडपन होना आवश्यक है। अक्खडपन के साथ साथ काम करने की प्रवृति भी आवश्यक है। अतः कवयित्री भोलेपन, अक्खडपन और जुझारूपन तीनो गुणों को बचाने की आवश्यकता पर बल देती

है।

11:1:20:प्रश्न - अभ्यास - कविताकेसाथ:4

4. प्रस्तुत कविता आदिवासी समाज की किन बुराइयों की ओर संकेत करती है?

उत्तर : इस कविता में आदिवासी समाज में जड़ता, काम से अरुचि, बाहरी संस्कृति का अन्धानुकरण, शराबखोरी, अकर्मण्यता, अशिक्षा,अपनी भाषा से अलगाव, परम्पराओं को पूर्णतः ग़लत समझना आदि बुराइयाँ आ गई हैं।

11:1:20:प्रश्न - अभ्यास - कविताकेसाथ:5

5. इस दौर में भी बचाने को बहुत कुछ बचा है - से क्या आशय है?

उत्तर : कविता कहती है कि भले ही आज के विकास के कारण मानवीय मूल्यों की उपेक्षा की गई है और प्राकृतिक संपदा नष्ट हो रही है। परन्तु अभी भी बहोत कुछ ऐसा है जिसे सार्थक

प्रयासों से बचाया जा सकता है। लोगों की आस्था, उनकी टूटती उम्मीदों को जीवित करना, सपनों को पूरा करना आदि ऐसे तत्व हैं जिन्हें सामूहिक स्तर पर प्रयास करके बचाया जा सकता है।

11:1:20:प्रश्न - अभ्यास - कविताकेसाथ:6

6. निम्नलिखित पंक्तियों के काव्य सौंदर्य को उद्घाटित कीजिए -

(क) **ठंडी होती दिनचर्या में**
जीवन की गर्माहट

(ख) **थोड़ा-सा विश्वास**
थोड़ी-सी उम्मीद
थोड़े-से सपने
आओ, मिलकर बचाएँ।

उत्तर :

(क) इस पंक्ति में कवयित्री ने आदिवासी क्षेत्रों में व्याप्त विस्थापन की पीड़ा को व्यक्त किया है। विस्थापन ने वहां से लोगों की दिनचर्या को उत्साह विहीन अर्थात ठंडी कर

दिया है। परन्तु हम अपने प्रयासों के माध्यम से उनके जीवन में उत्साह पैदा कर सकते हैं अर्थात गर्माहट जगाने की बात करती है।

(ख) प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से, कवयित्री का अर्थ है कि अविश्वास के दौर में अभी भी आपसी विश्वास, आशाओं और सपनों को बचाया जा सकता है। इन सभी को बचने के लिए सामूहिक प्रयास करने पड़ते है।

थोड़ा-सा' 'थोड़ी-सी' और 'थोड़े-से' इस तीनो का प्रयोग मामूली अंतर के साथ एक ही अर्थ ले आता हैं इसलिए यह अनुप्रास अलंकरण है। उर्दू, तत्सम और तद्भव शब्दों का मिश्रित उपयोग इस पंक्ति में किया गया हैं। छंदबद्ध और संगीत-प्रधान होने के कारण कहानी में एक आकर्षण है। खड़ी बोली का प्रयोग प्रशसनीय है।

11:1:20:प्रश्न - अभ्यास - कविताकेसाथ:7

7. बस्तियों को शहर की किस आबो-हवा से बचाने की आवश्यकता है?

उत्तर : शहर की नग्नता और जड़ता से बस्तियों को बचाने की जरूरत है। शहरी पर्यावरण में वेशभूषा, एकाकी जीवन, अलगाव, व्यस्तता आदि के साथ पर्यावरण का प्रदूषण भी एक बड़ी समस्या है। यदि बस्तियां भी इस के प्रभाव में आ गयी तो उनकी संस्कृति और पर्यावरण प्रदूषित हो जायेंगे। कवी इस सांस्कृतिक और पर्यावरणीय प्रदुषण से बस्तियों को बचाना चाहते है।

PAGE 183, प्रश्न - अभ्यास - कविताकेआसपास

11:1:20:प्रश्न - अभ्यास - कविताकेआसपास:1

8. आप अपने शहर या बस्ती की किन चीज़ों को बचाना चाहेंगे?

उत्तर : मैं अपने शहर की वास्तविक और सामाजिक विशेषताओं को बचाना चाहुनागा। जैसे पास वाला बगीचा और दूसरी तरफ वाला झरना जो साल भर थोड़ा थोड़ा ही सही पर बहता रहता है।

वहां कई प्रकार के पक्षी पानी पीने आते है। शहर की समुहुक उत्सव मनाने की परंम्परा जो सबको एक साथ जोड़ के रखती है। अपने रिवाज़ो को बचाना चाहूंगा जो हमें जमीन से जोड़े रखती है।

11:1:20:प्रश्न - अभ्यास - कविताकेआसपास:2

9. आदिवासी समाज की वर्तमान स्थिति पर टिप्पणी करें।

उत्तर : आदिवासी समाज की वर्तमान स्थिति धीरे-धीरे बदल रही है। अब पहले की तुलना में आदिवासियों पर अधिक ध्यान दिया जा रहा है, आदिवासी बहुल क्षेत्रों में शिक्षा केंद्र खोले जा रहे हैं। वहां के लोंगो का आर्थिक स्तर सही करने के लिए वह के बेरोजगार लोंगो को रोजगार दिया जा रहा है। आदिवासी संस्कृति , उनकी कला और परपरागत विशास्ताओं को बचने के लिए विशेष प्रयास किये जा रहे है। उनके समाज पहचान को बचते हुए उन्हें आधुनिक समाज से जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है।